[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No...............

आपका अनुक्रमांक............

Sr. No. of Question Paper : 5926 **H**

Unique Paper Code : 2055002002

Name of the Paper : Hindi Gadya : Udbhav aur Vikas (B)

Name of the Course : **G.E. : Hindi-B**

Semester : IV

Duration : 3 Hours Maximum Marks : 90

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (8×3=24)

(क) शैल के एक ऊचौ शिखर पर चम्पा के नाविकों को सावधान करने के लिए सुदृढ़ दीप-स्तम्भ बनवाया गया था। आज उसी का महोत्सव है। बुधगुप्त स्तम्भ के द्वार पर खड़ा था। शिविका

से सहायता देकर चंपा को उसने उतारा दोनों ने भीतर पदार्पण किया था कि बांसुरी और ढोल बजने लगे। पक्तियों में कुसुम - भूषण से सजी वन-बालाएं फूल उछालती हुई नाचने लगीं।

अथवा

"'क्या तुम नियति में विश्वास करतें हो, ह्यूबर्ट?'" डॉक्टर ने कहा। ह्यूबर्ट दम रोके प्रतीक्षा करता रहा वह जानता था कि कोई भी बात कहने से पहले डॉक्टर को फिलासोफाइज करने की आदत थी डॉक्टर टैरेस के जगले से सटकर खड़ें हो गये। फीकी-सी चांदनी में चीड के पेड़ों की छायाएं लॉन पर गिर रही थी कभी-कभी कोई जुगनू अन्धेरें में हरा प्रकाश छिड़कता हुआ हवा में गायब हो जाता था।

(ख) अब धर्म-सबंध में जिह्वा पर लगाम रखने की कितनी आवश्यकता है सो दिखलाते है सच तो यों है कि जीभ पर बिना कोड़ा रखे धर्म निष्ठों को धरम धुरंधर बनने का दावा करना सर्वथा व्यर्थ है। वह अवश्य धोखे में पडा है जो अपने को धर्म निष्ठ तो मानता है पर जीभ को अपने काबू में नहीं किया। झूट बोलना, झूठी गवाही देना, चुगली, बदगोई इत्यादि से बचना ही जीभ पर लगाम नहीं कहलावेगा क्योकिं झूठी गवाही, चुगली, गाली इत्पादि बड़े-बड़े पापों का विषय निराला है।

अथवा

सच्चे वीर पुरुष धीर गम्भीर और आजाद होते हैं। उनके मन की गम्भीरता और शान्ति समुन्द्र की तरह विशाल और गहरी या आकाश की तरह स्थिर और अचल होती है। वें कभी चचल नहीं होते द्य रामायण में वाल्मीकि जी ने कुम्भ करण की गाढ़ी नींद में वीरता का एक चिह्न दिखलाया है। सच है, सच्चे वीरो की नींद आसानी से नहीं खुलती। वें सत्व गुण के क्षीर-समुन्द्र में ऐसे डूबे रहतें है किउनको दुनिया की खबर ही नहीं होती। वें संसार के सच्चे परोपकारी होतें हैं।

(ग) जो प्रेम देश की हत्या करें, उसका गला घोंटना ही होगा। श्रीपाल मालवा के मानों, नदी-पर्वतों से परिचित है शक सैन्य सख्या में हमसे अधिक है उनके पास अपार अश्वारोही दल है, अस्त्र-शस्त्र भी अपरिमित है। यदि उन्हें इस देश की भूमि से परिचित व्यक्ति मित्र जाए तो परिणाम हमारे लिए भयकर है। सोचो विजया, उस स्थिति में हमारे देश का क्या होगा?

अथवा

मेरे बैठने के स्थान अनेक हैं। कभी पीपल के तने का सहारा लेकर उसकी ऊची जड़ों का सिंहासन बनाती हूँ, कभी आम के नीचे सूखी पत्तियों के बिछौने का। कभी किसी के ओसारे में पड़ी खटिया पर आसीन होती हूँ, कभी किसी के आगन में तुलसी चौरा के सामने चटाई पर पत्र लिखने का प्रस्ताव सबसे पहले जो करता है, उसी के इच्छानुसार शेष को चलना पड़ता है। पत्र लिखवाने वाला निकट बैठता है और सब उससे कुछ हटकर आस पास केवल अभिवादन भेजने वाले आते-जाते रहते हैं।

2. संस्मरण विधा के उद्भव और विकास पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

जीवनी का सामान्य परिचय दीजिए।

3. आकाशदीप कहानी के नायक बुद्धगुप्त की चारित्रिक विशेषताएं लिखिए। (15)

अथवा

निर्मल वर्मा की कहानी परिंदे की मूल सवेदना लिखिए।

4. जबान निबन्ध के माध्यम से बालकृष्ण भट्ट क्या कहना चाहते है? स्पष्ट कीजिए। (15)

अथवा

सच्ची वीरता निबन्ध की समीक्षा कीजिए।

5. मालव प्रेम एकांकी के कथ्य पर प्रकाश डालिए। (15)

अथवा

'गुगिया' संस्मरण के आधार पर गुगियाँ की चारित्रिक विशेषतायें लिखिए।

6. निम्नलिखित में से **किसी** एक पर टिप्पणी लिखिए : (6)

(i) एकांकी

(ii) कहानी के तत्व

(4000)